२१ सदी के ग्रामीण कथाकारों में सांस्कृतिक चेतना

सुप्रिया सिंह
(शोधार्थी)
हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, (मध्य प्रदेश)

भारत को गाँवो का दे"ा हैं। 21वीं शती के हिन्दी उपन्यास का गाँव प्रेमचन्द्र, रेणु, श्रीलाल शुक्ल आदि के गाँव से अलग हैं। अस्सी के द"ाक के बाद से गाँवो का चरित्र जितनी तेजी से बदला हैं, इस बदलाव को गाँव की पृष्ठभूमि से जुडें कथाकारों ने अपने कथानुभव का हिस्सा बनाया हैं, नई कहानी के दौर में ही कहानियों की एक धारा के द्वारा ग्रामीण संवेदना की कहानियाँ लिखी जा रही हैं, नई कहानी का दौर जैसे – जैसे आगे आने वाले समय में विस्तारित हुआ, वह केवल मध्यवर्ग तक सिमट कर रहा गया।

इनके बीच ग्रामीण जीवन के नए बदलते रूप और भूमि संबधो के साथ उनके संघर्षो की अभिव्यक्ति जैसे कथानक बेहद सीमित हो गए। ग्रामीण जीवन की उपेक्षा को ग्रामीण जीवन के कथाकारों ने गम्भीरता – पूर्वक प्रतिकार किया। दरअसल ग्रामीण जीवन हिन्दी कहानी में लम्बे समय से उपेक्षित था। "प्रेमचंद के बाद से जीवन का वह पक्ष उपेक्षित पड़ा था, और उसकी ओर उन्मुख होना एक प्रकार से लेखक के लिए नये भाव – जगत की उपलब्धि थी।"

इस दौर में ग्रामीण जीवन पर लिखने वाले कथाकार थेः–
मार्कण्डेय, ि"ाव प्रसाद सिंह और फणी"वरनाथ रेणु।

ि"ावप्रसाद सिंह और रेणु, मार्कण्डेय के केवल समकालीन ही नही थे, बल्कि प्रवृत्ति के हिसाब से भी दोनो मार्कण्डेय के करीबी थे। "रेणु, मार्कण्डेय और ि"ाव प्रसाद सिंह की एक त्रयी बनती हैं।" ग्राम्य जीवन के प्रति लगाव इन तीनो कथाकारों को एक सूत्र में जोड़ता हैं।

नई कहानी अन्दोलन में मार्कण्डेय ग्राम कहानी के प्रवक्ता और सूत्रधार बनकर सामने आये। कहानी में ग्राम कथानकों – के अपने आग्रह को रेखांकित करते हुए उन्होने लिखा हैं–
"वास्तव में कहानी के सामने अभिव्यक्ति अथवा ि"ाल्प की बारीक पैठ के साथ ही मुख्य बात हैं, जीवन की उभरती हुई वास्तविकताओं को उसके पूरे परिवे"ा के साथ ग्रहण करने की। प्रेमंचद्र और य"ापाल के बाद फीकी और उदास और मरणोन्मुख कहानी को स"ाक्त साहित्य – विधा के रूप में एक बार फिर विचार – विम"ार्ा का केन्द्र बना देने का श्रेय इसी नवीन ग्रहणशीलता के साथ आये ग्राम – कथानकों को हैं।" (कहानी फरवरी 59 पृष्ठ 70)

मार्कण्डेय की कहानियों का पहला संग्रह 'पान–फूल सन् '54 में प्रकाि"ात हुआ, मार्कण्डेय अपनी इन कहानियों में भारतीय ग्राम जीवन से अपने रागात्मक सम्बन्धों की छाप ही नहीं छोड़ते, वे उस जीवन विकृतियों और अतंर्विरोधो को भी देखते हैं।

'गुलरा के बाबा', 'सबरइया,' 'घूरा' और 'पान फूल' आदि कहानियॉ एक ओर यदि परिवे"ा के प्रति मार्कण्डेय के रागात्मक लगाव का संकेत देती है, तो वही वे उनके रचनात्मक सरोकारो को भी स्पष्ट करती हैं।

'पान – फूल' अलग – अलग वर्गो की दो लडकियो रितिया और नीली को केन्द्र में रखकर सामाजिक ऊँच – नीच के कृत्रिम विभाजन के विरोध एक बनावटी आर्द"ावादी और भावुकतापूर्ण कहानी हैं। मार्कण्डेय की ये कहानियाँ अपने ढ़ग से सामाजिक रूढ़ियो अंधवि"वासो का विरोध करती हैं, लेकिन उस विरोध का स्वर और प्रभाव कोई गहरी प्रतिक्रिया नहीं छोड़ते। 'नीम की टहनी' जैसी कहानी में एक अधंवि"वास के विरोध में लेखक दूसरे अंधवि"वास का ि"ाकार हो जाता हैं। संग्रह की कई कहानियाँ – बासवीं की माँ, सात बच्चों की माँ, और 'कहानी के लिए नारी पात्र चाहिए' – भारतीय समाज में स्त्री के नियति को परिभाषित और अंकित करने की इच्छा का परिणाम हैं।

कहानियों में आए वक्तव्यों की स्थूलता के बावजूद ये कहानियॉ, एक लेखक के रूप में, मार्कण्डेय के सरोकारो को उद्घाटित करती हैं।

'पान के फूल' के बाद 'महुए का पेड़' से लेकर 'बीच के लोग' तक मार्कण्डेय की कहानियों में अपने समय – संदर्भो के प्रति सजगता क्रम"ाः विकसित होती देखी जा सकती है। 'महुए का पेड़' 'कल्याण मन', 'हंसा जाई अकेला', 'सहज और शुभ' तथा 'मधुपुर' के सिवान का एक कोना', आदि कहानियो में परिवे"ा के पति एक गहरी रागात्मक संपृक्ति देखी जा सकती हैं, लेकिन फिर भी परिवे"ा की उनमें चरित्र अधिक महत्वपूर्ण हैं। झोपड़ी के सामने खड़ा महुए का पेड़ दुखना के लिए अपने अस्त्तिव की एक अनिवार्य शर्त बन जाता हैं। ठाकुर के ऊँट के लिए काटी गई उसकी शाखें जैसे दुखना के अपने अस्तित्व में से ही कुछ काटकर अलग कर देती हैं। 'हंसा जाई अकेला' में अपने परिवे"ा के प्रति हंसा का लगाव गाँव की गलियों की सफाई से लेकर धान, ईख और मकई के खेतो का मेड़ो पर उसका गाते रहना क्या केवल परिवे"ा के लिए ही हैं ?

अप्रत्यक्ष रूप से इस सबके पीछे कही सु"ाीला जी का 'होना' हैं, जो कभी इस परिवे"ा का एक जरूरी और जीवंत हिस्सा थी और अब नहीं हैं। जिसके होने मात्र से, हंसा की रतौंधी के कारण रातों में उजाले का सैलाब आता दिखायी दिया था।

ग्राम परिवे"ा की अपनी इन कहानियों में मार्कण्डेय यदि एक ओर आधुनिक भूमि सुधारों और सरकारी विकास योजनाओं की वास्ताविकता उद्घाटित करते हैं, तो यही उन क्रांतिकारी शक्तियो को भी रेखांकित करते हैं जो स्थिति में एक गुणात्मक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध हैं। उनकी 'भूदान' और 'आद"ा कुक्कुटग्रह' जैसी कहानियाँ भूदान आन्दोलन और सरकारी योजनाओं की कलई खोलती हैं।

अपनी कहानियों में एक ओर रेणु आधुनिकीकरण की विडंबना के रूप में शहर की ओर पलायन करते ग्रामीण युवको को अंकित करते हैं तो दूसरी ओर भारतीय ग्रामों की लोक कला एंव लोक संस्कृति को मि"ानरी उत्साह और काव्यात्मक संवेदना के साथ पुनर्जीवित करने का प्रयास करते हैं। 'विघटन के क्षण' में शहर आकर रिक"ाा खीचने और दरबानी करने वाले लोग हैं, जो गाँव लौटकर शहरी विकास और समृद्धि की कहानियाँ खूब अकड़ के साथ सुनाते हैं।

'भित्ति चित्र की मयूरी' की फुलपत्ती चित्र की मयूरी की तरह अपनी धरती और जड़ो से अलग होना नहीं चाहती। अपनी धरती और परिवे"ा के बीच ही जैसे वह जीवंत और प्राणवान हैं।

रेणु की इन कहानियों का वै"िष्ट्य ग्राम – संस्कृति के प्रति उनकी गहरी ललक के रूप में रेखांकित किया जा सकता हैं, उनके सूमचे रचना कर्म की यह बुनियादी पहचान हैं।

प्रेम संबंधो को आधार बनाकर लिखी गयी रेणु का कहानियों की खूब चर्चा हुई हैं, 'तीसरी कसम अर्थात् 'मारे गए गुलफाम' रसप्रिया, और 'एक आदिम रात्रि की महक' जैसी कहानियों के मुकाबले तीसरी कसम अर्थात् मारे गए गुलफाम में रोमानी भाव – बोध अधिक स्पष्ट और मुखर हैं।

रेणु की कहानियों की कथावस्तु सामान्य जीवन से उठायी गयी हैं। उसमें किसी प्रकार की असाधरणता नहीं हैं। ग्रामांचल को लेकर लिखने वाले और भी कहानीकार हैं, जैसे मार्कण्डेय और ि"ाव प्रसाद सिंह। इन दोनों की कहानियों में एक विचित्र प्रकार की नास्टेलजिया मिलती हैं। वे गाँव के उन वि"ोषताओं की ओर उन्मुख हैं, जो अब निः "ोष हो गयी हैं।

'लाल 'पान की बेगम' और 'मारे गए गुलफाम' दोनो कहानियों में गाँव की उन वि"ोषताओं को, उन अस्थाओं को प्रस्तुत किया गया हैं, जो हमारे जीवन – बोध को कहीं न कहीं छूकर और भी प्राणवान बना देती हैं।

रेणु की कहानियों में अंचल वि"ोष की धरती की सौंधीगंध मिलती हैं। रेणु केवल पात्रों के माध्यम से अपने को अभिव्यक्त नहीं करते, बल्कि सारे परिवे"ा को अपनी कहानियों में उतार देते हैं। इस परिवे"ा में धान के पौधों की अपनी गंध है, चंपा, गुलाब और हरसिंगार के फूलों की भीनी महक हैं, लोकगीतों की आह्लादपूर्ण तान हैं, सुन्दरियों के आंचल की मह – मह करने वाली सुगंध हैं, वन फूलों का सौरभ हैं।

ग्राम्य जीवन में जो नवीन मूल्य आ रहे हैं, और प्रगति"ाीलता के जो चिह्य छिपे पड़े हैं, उन्हे उभारने का रेणु ने वि"ोष रूप से प्रयत्न किया हैं।

नई कहानी अन्दोलन में ि"ाव प्रसाद सिंह की पहचान मूलतः एक ग्राम कथाकार के रूप में उभर कर आई थी। लेकिन ग्रामीण यथार्थ के अपने अंकन में न तो वे वैचारिक तेजस्विता अपनाते दिखाई देते हैं, ि"ावप्रसाद सिंह की इन कहानियों की दुनिया अधिकतर बूढे और आर्द"ा पात्रों की दुनिया हैं– चाहें वह 'नई पुरानी तस्वीरे' की बुआ हो या 'हीरों की खोज' के बोधन तिवारी।

ि"ावप्रसाद सिंह इस बात को स्वीकार भी करते हैं कि सामंती मूल्यों और जीवन पद्धति में सब कुछ बुरा ही नहीं था और यदि उनके कुछ पात्र सकारात्मक पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं तो इसमें कोई बुराई नहीं समझते।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 21 वीं सदी ग्रामीण कथाकारों में सर्वत्र सांस्कृतिक चेतना विद्यमान हैं।

सन्र्दभ ग्रन्थ

1 हिन्दी कहानी का विकास – मधुरे"।
2 21 वीं शती का हिन्दी उपन्यास – पुष्पपाल सिंह
3 कहानी के नये प्रतिमान – कुमार कृष्ण
4 कहानी नयी कहानी – नामवर सिंह
5 हिन्दी उपन्यास का विकास – मधुरे"।